I.G.N.O.U. Based

NEERAJ®

B.H.D.E.-107

हिन्दी संरचना

By: *Chavi Rastogi*

Question Bank** Cum **Chapterwise Reference Book
Including **Many Solved Question Papers**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, Ist Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ₹ 240/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajignoubooks.com**
Website: **www.neerajignoubooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only	*Typesetting by:* Competent Computers	*Printed at:* Novelty Printer

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajignoubooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajignoubooks.com.***
No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.
We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006

Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501

E-mail: **info@neerajignoubooks.com** *Website:* **www.neerajignoubooks.com**

CONTENTS

हिन्दी संरचना

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2016 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2015 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2013 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2012 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2011 (Solved)	1-2

S.No.	*Chapterwise Reference Book*	*Page*

ध्वनि संरचना

1.	भाषा की संरचना	1
2.	हिन्दी की स्वर ध्वनियाँ	21
3.	हिन्दी की व्यंजन ध्वनियाँ	25

रूप रचना

4.	शब्द और रूप	30
5.	रूप रचना : रूप सिद्धि	41
6.	रूप रचना	46
7.	संयुक्त शब्द और समस्त शब्द	54
8.	ध्वन्यात्मक, अनुकरणात्मक तथा पुनरुक्त शब्द	62

S.No. Chapter	Page
वाक्य संरचना	
9. हिन्दी में पदबंध संरचना	67
10. वाक्य संरचना : सरल वाक्य	77
11. संयुक्त वाक्य	82
12. मिश्र वाक्य	87
13. प्रोक्ति संरचना	94
14. हिन्दी की शब्दावली : स्त्रोतगत अध्ययन	103
15. हिन्दी की शब्दावली : अर्थगत अध्ययन	107
16. पारिभाषिक शब्दावली	112
17. मुहावरे और लोकोक्तियाँ	122
हिन्दी का सामाजिक संदर्भ	
18. भाषा का सामाजिक संदर्भ	127
19. रिश्ते-नाते की शब्दावली	133
20. सर्वनाम और संबोधन रूप	139
21. कोड मिश्रण एवं कोड परिवर्तन	147
22. हिन्दी भाषा की शैलियाँ	152
लिपि और वर्तनी	
23. लिपि का विकास और देवनागरी लिपि	160
24. देवनागरी लिपि और उसकी विशेषताएँ	168
25. देवनागरी का मानकीकरण : अन्य भाषाओं के लिपि-चिह्न	177
26. हिन्दी वर्तनी की समस्याएँ	183

■■

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

(June – 2019)

(Solved)

हिन्दी संरचना

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

***नोट : खण्ड क** में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर लिखिए। खण्ड ख **अनिवार्य** है।*

खण्ड–क

प्रश्न 1. शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए शब्द और पद के अंतर का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-36, प्रश्न 1, पृष्ठ-30, 'शब्द और पद'

प्रश्न 2. रूपिम के भेदों का उदाहरण सहित विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-34, 'रूपिमों के भेद-प्रभेद'

प्रश्न 3. संयुक्त शब्द की संकल्पना स्पष्ट करते हुए उसके प्रमुख अभिलक्षणों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-54, 'संयुक्त शब्दों की संकल्पना', 'संयुक्त शब्दों के प्रमुख अभिलक्षण'

प्रश्न 4. पदबंध का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए उसका संरचनात्मक वर्गीकरण उदाहरण सहित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-67, 'पदबंध से तात्पर्य', पृष्ठ-68, 'पदबंध का संरचात्मक वर्गीकरण'

प्रश्न 5. अर्थ संबंधों के आधार पर संयुक्त वाक्य के विविध प्रकारों का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-83 'संयुक्त वाक्यों के प्रकार'

प्रश्न 6. पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-114 'पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया'

प्रश्न 7. लोकोक्ति का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके प्रकारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-123, 'लोकोक्ति शब्द से तात्पर्य', पृष्ठ-124, 'लोकोक्तियों के प्रकार'

प्रश्न 8. देवनगरी लिपि के गुण एवं दोषों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-24, पृष्ठ-169 'देवनगरी लिपि: गुण/दोष'

प्रश्न 9. मानकीकरण का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए देवनागरी लिपि के मानकीकरण की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए

खण्ड–ख

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए–

(क) व्यंजक शब्द और व्यंग्यार्थ

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-108, 'व्यंजक शब्द और व्यंगार्थ'

(ख) शून्य रूपिम

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-36, 'शून्य रूपिम'

(ग) शब्द और पद

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-30, 'शब्द और पद'

(घ) पारिभाषिक शब्द

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-112, 'पारिभाषिक शब्द से तात्पर्य'

(ङ) अनुकरणात्मक शब्द

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-63, 'अनुकरणात्मक शब्द'

(च) मनोवेगात्मक वाक्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-79, 'मनोवेगात्मक वाक्य'

इसे भी देखें–जिन वाक्यों में आश्चर्य, हर्ष, शोक, घृणा आदि के भाव व्यक्त हो, उन्हें विस्मयबोधक वाक्य कहते हैं। इन वाक्यों में सामान्यत: विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण:–

अरे! इतनी लम्बी रेलगाड़ी।

ओह! बड़ा जुल्म हुआ।

www.neerajbooks.com

छि:! कितना गन्दा दृश्य।

शाबाश! बहुत अच्छे।

इन वाक्यों में आश्चर्य (अरे), दु:ख (ओह), घृणा (छि:), हर्ष (शाबाश) आदि भाव व्यक्त किए गए हैं, अत: ये विस्मयादिबोधक वाक्य है।

विस्म्यादिवाचक वाक्यों में किसी तीव्र भावना को जताने के लिए जो शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं उन्हें विस्मय बोधक शब्द कहते हैं। उदाहरण-

अरे! अरे यार! ओह! छि:! शाबाश! ये क्या! हाय! हे भगवान! काश! अच्छा!

(छ) मिश्र वाक्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-87, 'मिश्र वाक्य की संरचना'

प्रश्न 11. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर विचार कीजिए।

(क) संलाप तथा एकालप

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-99, प्रश्न 4, 5

(ख) समास

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-50, 'समास'

(ग) विपरीतार्थक शब्द

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-109, 'विपरीतार्थक शब्द'

(घ) हिन्दी सर्वनामों का सामाजिक प्रयोग

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-20, पृष्ठ-139, 'हिंदी सर्वनामों का सामाजिक संदर्भ', पृष्ठ-140, 'सामाजिक आचरण और सर्वनाम प्रयोग'

(ङ) ब्राह्मी लिपि

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-23, पृष्ठ-162, 'ब्राह्मी लिपि'

(च) कोड परिवर्तन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-21, पृष्ठ-149, 'कोड परिवर्तन

(छ) मिश्र वाक्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-110, प्रश्न 1

■■

Neeraj Publications
www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

हिन्दी संरचना

ध्वनि संरचना

भाषा की संरचनात्मक इकाइयाँ

1

परिचय

हमारे दैनिक जीवन में भाषा का काफी प्रयोग होता है। इसके अभाव में हम अपनी कोई भी बात किसी के भी सामने प्रकट नहीं कर सकते। समाज और मनुष्य दोनों के लिए भाषा की महत्ता होती है। भाषा को दो भागों में विभक्त किया गया है प्रथम मौखिक और द्वितीय लिखित।

इन दोनों ही प्रकार की भाषाओं का हमारे जीवन में अत्यंत महत्त्व है। भारत में अनेकों प्रकार की भाषाओं का प्रयोग करने वाले नागरिक हैं, लेकिन भाषा की जो आंतरिक गूढ़ता और संरचना को बहुत ही कम लोग समझ पाते हैं। किसी भी भाषा को व्यवस्थित करने के लिए उस भाषा की व्यवस्था का क्रम होना अनिवार्य माना गया है। किसी भी प्रकार की भाषा का एक व्याकरण रूप होना अनिवार्य होता है। व्याकरण के माध्यम से भाषा के अलग-अलग अवयवों के उचित संयोजन से ही भाषा की उचित व्यवस्था बनती है।

भाषा का अध्ययन करने के लिए आधुनिक भाषा विज्ञान में अनेकों प्रकार की शाखाएँ बन चुकी हैं। भाषा के स्वरूप को भाषा की इकाइयों से निर्मित किया जाता है। किसी भी प्रकार की भाषा को व्याकरण के बिना उचित रूप देना सहज नहीं होता। इसीलिए संरचनात्मक इकाइयों को मानक व्याकरण का आधार माना जाता है। भाषा का जो भी मौखिक रूप होता है, वह पूर्णत: वैविध्यपूर्ण होता है, किन्तु उसका लिखित रूप एकरूपी होता है। लिखित और मौखिक भाषा के जिस-जिस विकल्प को हम भाषा संबंधी उदासीनता के कारण देख नहीं पाते, उसे हम भाषा संबंधी इकाइयों के द्वारा सम्पूर्ण रूप से देख सकने में समर्थ हो सकते हैं। यदि हमें संरचनात्मक इकाइयों की समस्त जानकारी होगी, तो हम भाषा के किसी भी रूप को पूर्णरूपेण पहचान सकते हैं।

अध्याय का विहंगावलोकन

भाषा-व्यवस्था की संकल्पना

भाषा को हमेशा एक व्यवस्था के रूप में देखने का प्रयास किया गया है। भाषा विज्ञान के जनक **सस्यूर** ने भी भाषा-व्यवस्था की संकल्पना पूर्णत: प्रतिपादित की थी। भाषा की इकाइयों का वह संगठन, जिसके द्वारा भाषा का व्याकरण रूप बनता है, उसे 'व्यवस्था' का नाम दिया गया है। सस्यूर ने दो संकल्पनाओं के माध्यम से भाषा को समझाने का प्रयास किया है पहला भाषा व्यवस्था तथा दूसरा भाषा व्यवहार। भाषा व्यवस्था का रूप नियमबद्ध मानक और आदर्श होता है। इसी रूप का प्रजनित विकल्पन भाषा व्यवहार (लॉग) होता है, जिसका अभिपालन भाषा प्रयोग की आदर्श स्थितियों में किया जाता है। भाषा व्यवहार (लॉग) इसी प्रकार की एक व्यवस्था में बंधी होती है।

भाषा व्यवहार (पारोल) अनेक रूपों में होता है। हम अपनी क्षेत्रीयता, सामाजिक वर्ग-भेद और शिक्षा में बँधकर ही भाषा व्यवहार का प्रयोग करते हैं। जैसे पत्र-पत्रिकाओं में, औपचारिक वार्तालाप में, पुस्तकों में इसी हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। लॉग (भाषा व्यवस्था) कुछ निश्चित क्षेत्रों में अभिव्यक्ति का माध्यम होता है। भाषा का व्यावहारिक रूप पारोल कहलाता है। जितना एक विशेष संदर्भ और परिस्थिति में संप्रेषण को सम्पन्न करने की अभिलाषा को महत्त्व दिया जाता है, उतना भाषा की मानकता को महत्त्व नहीं दिया जाता। भाषा के दोनों रूप प्रत्येक भाषा समुदाय में होते हैं। भाषा व्यवहार से संबंधित भाषा रूपों का प्रयोग अनौपचारिक परिस्थिति के संदर्भ में किया जाता है, जबकि भाषा व्यवस्था में बंधे भाषा रूप का प्रयोग औपचारिक परिस्थितियों में किया जाता है। समाज के सदस्यों के पास अपनी अभिव्यक्ति के लिए भाषा के अनेकों रूप होते हैं, जिससे वह अपनी किसी बात को किसी के भी सामने प्रकट कर सके;

जैसे बुजुर्गों के साथ किसी और भाषा का प्रयोग, मित्रों के साथ किसी और प्रकार की भाषा का प्रयोग, अपने भाई-बहनों के साथ किसी अन्य प्रकार की भाषा का प्रयोग आदि।

भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार इन दोनों का प्रयोग समयानुसार और आवश्यकतानुसार करना होता है। मानव मस्तिष्क में किसी भी प्रकार की भाषा को ग्रहण करने की अतुलनीय क्षमता होती है। हमारा मस्तिष्क किस समय, कहाँ, कब, किससे, किस भाषा का प्रयोग करना है, सहजता से निर्णय कर लेता है। भाषा-भण्डार ही मनुष्य मस्तिष्क की अद्भुत क्षमता है। भाषा-विज्ञान के चिन्तक **चामस्की** ने भी व्यवस्था को भाषा का आदर्श माना है।

अत: स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि रचनात्मक इकाइयाँ पूर्ण रूप से व्याकरण के नियमों से आबद्ध होती हैं, इसलिए आधुनिक भाषा को संरचनात्मक इकाइयों के माध्यम से दो भागों में विभक्त करने का प्रयास किया गया है

1. व्यवस्था के आधार पर

(i) मानक भाषा;
(ii) व्याकरणसम्मत भाषा;
(iii) औपचारिक भाषा तथा
(iv) परिनिष्ठित भाषा

2. व्यवहार के आधार पर

(i) सामाजिक शैली;
(ii) क्षेत्रीय शैली;
(iii) प्रयोजनमूलक शैली और
(iii) मिश्रित शैली

भाषा संरचना की इकाइयों के अभाव में किसी भी प्रकार की भाषा का ज्ञान प्राप्त करना असंभव होता है, जिसके फलस्वरूप हम भाषा के आदर्श रूप से वंचित रह जाते हैं। गांव और कस्बों में रहने वाले अपने वार्तालाप में मानक हिन्दी का प्रयोग नहीं कर पाते हैं, वे लोग अपनी ही भाषा का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार की भाषा का प्रयोग करने का कारण उनका अशिक्षित होना है। इस प्रकार के लोग हिन्दी के औपचारिक रूप यानि उसके लिखित रूप से भी वंचित रहते हैं। समाज में ऐसे बहुत ही कम लोग हैं, जो भाषा के आदर्श रूपों से परिचित हों। हिन्दी का मानक रूप भाषा के विकास का विस्तार करने में काफी सहायता प्रदान करता है। भाषा के विकास का प्रमाण उसकी लिखित सामग्री होती है। किसी भी प्रकार की भाषा के विकास का मापदण्ड उसका व्याकरण उपलब्ध होना है। मानक रूप में व्याकरणसम्मत भाषा को उसका वास्तविक रूप माना जाता है, जिसका प्रयोग लेखन और औपचारिक संदर्भों में किया जाता है। ये सभी संरचनात्मक इकाइयाँ होती हैं। भाषा समुदाय के सभी सदस्य भाषा के विविध रूपों का प्रयोग करना जानते हैं। हमारे जीवन में भाषा व्यवहार का काफी महत्त्व होता है। ऐसे लोगों (सदस्यों) की संख्या काफी कम होती है, जो भाषा व्यवस्था पर पर्याप्त अधिकार रखते हैं। इसके पश्चात भी मानक भाषा का प्रयोग व्याकरण में अभीष्ट माना जाता है; जैसे पाठ्य-पुस्तकों का माध्यम, साहित्य लेखन आदि। मानक भाषा की सम्पूर्ण जानकारी अर्जित करके हम औपचारिक भाषा व्यवहार को और भी ज्यादा प्रभावशाली समर्थ बना सकते हैं।

भाषा संरचना का तात्पर्य

संरचनात्मक इकाइयों के सही संगठन के द्वारा भाषा की सम्पूर्ण व्यवस्था उचित प्रकार से दिखाई दे सकती है। भाषिक संरचनाओं को भाषा व्यवस्था का अंग कहा जाता है। विचारों के आदान प्रदान को ही भाषा के रूप में पहचाना जाता है, लेकिन भाषा की यह संज्ञा पूर्णत: सही नहीं मानी जाती, क्योंकि मनुष्य अनेक प्रकार से अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है; जैसे हाथ से, आंख से, सिर हिलाकर, जीभ दिखाकर आदि। इस प्रकार की विभिन्न अंगिक क्रियाओं के द्वारा मनुष्य अपने विचारों को व्यक्त करता है, लेकिन इस प्रकार की क्रियाओं को भाषा विज्ञान की दृष्टि से भाषा नहीं माना गया है। भाषा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से सीमाबद्ध होनी चाहिए। भाषा की संरचना का अध्ययन करना ही भाषा विज्ञान का कार्य है। आधुनिक भाषा विज्ञान का उद्देश्य भाषा की आंतरिक संरचना को समझना और उसे व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करना है और इसी से इस तथ्य की पूर्णत: पुष्टि होती है कि भाषा सम्पूर्ण रूप से संरचनात्मक इकाइयों की व्यवस्था है। भाषा व्यवस्था की चर्चा करते हुए **सस्यूर** ने कहा था कि भाषा अभिव्यक्ति की एक पद्धति है। **सस्यूर** ने यह भी कहा था कि जो भी पद्धति का ढाँचा होता है, उसे उसकी संरचना माना जाता है। **सस्यूर** ने भाषा संरचना को स्पष्ट करते हुए कहा है कि "भाषा एक व्यवस्था है, भाषा व्यवस्था का एक अपना निश्चित ढाँचा होता है। इसलिए उसे भाषा की संरचना कहा जाता है।"

किसी भी प्रकार की व्यवस्था या पद्धति के एक या एक से अधिक अंग हो सकते हैं। इस प्रकार से सभी अंग एक होकर एक ही दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित रहते हैं। भाषा व्यवस्था के भी कई अंग होते हैं और उन अंगों के आधार पर भाषा के किसी भी प्रकार के रूप को विश्लेषित किया जा सकता है।

भाषा की लघुत्तम इकाई उसकी ध्वनि कहलाती है। इन ध्वनियों के बारे में यह भी कहा जाता है कि ये विचार-विनिमय में सहायक नहीं होती। अर्थ की अभिव्यक्ति सिर्फ ध्वनि का प्रयोग करने से ही नहीं की जा सकती। भाषा की यह लघुत्तम संरचनात्मक इकाई अपने स्वतंत्र रूप में निरर्थक होती है। ध्वनियों को भाषा की मूलभूत इकाइयाँ माना जाता है। ध्वनियों के योग से ही इकाइयों की संरचना होती है। कभी-कभी हिन्दी की ध्वनियों से सार्थक शब्द बन जाते हैं; जैसे ढ्, त्, बुढ्ढा, इनसे बनने वाले

www.neerajbooks.com

शब्द हैं कुत्ता आदि। शब्द तभी बनते हैं; जब सम्पूर्ण रूप से ध्वनियों का योगदान होता है। किसी भी भाषा में सर्वाधिक संख्या शब्दों की होती है। इसी कारण से शब्द को भाषा का दूसरा रूप कहा जाता है। शब्द, रूप व पद इन तीनों ही इकाइयों की अपनी-अपनी महत्ता होती है। इन तीनों का अलग से कोई महत्त्व नहीं माना जाता। लेकिन जब शब्द और पदों का सामंजस्य स्थापित होता है, तो वाक्य का निर्माण होता है। वाक्य पूर्णत: अर्थवान होते हैं, क्योंकि जब हम अपनी बात किसी से भी कहते हैं, तो वह वाक्य के माध्यम से ही कहते हैं और दूसरा व्यक्ति हमारी बात को सहज ही समझ लेता है। भाषिक इकाई में 'अर्थ' का भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि जब भी हम किसी से अपनी बात कहते हैं, तो उसका अर्थ निकलना आवश्यक होता है। वह बात चाहे मौखिक रूप में हो या लिखित रूप में, जिस प्रकार से हमारे जीवन में निरर्थक भाषा का कोई प्रयोग नहीं होता, उसी प्रकार से अर्थहीन वाक्य का भी कोई महत्त्व नहीं होता। ध्वनि, रूप, अर्थ, शब्द इन सभी के सहयोग से उचित प्रकार का वाक्य निर्मित होता है। वाक्य के महत्त्वपूर्ण अंग माने जाते हैं अर्थ और ध्वनि।

भाषा की संरचनात्मक इकाइयाँ

भाषा की संरचनात्मक इकाइयों में निम्नलिखित घटकों को सम्मिलित किया गया है

1. ध्वनि संरचना

भाषा की अत्यधिक लघु इकाई ध्वनि को माना जाता है। भाषा वस्तुत: ध्वनि-प्रतीकों की व्यवस्था है। भाषा विज्ञान में ध्वनि की संरचना को निम्न प्रकार से विश्लेषित किया गया है

1. ध्वनि (Sound)	1. ध्वनिविज्ञान (Phonetics)
2. अर्थ (Meaning)	2. अर्थविज्ञान (Semantics)
3. स्वनिम (Phoneme)	3. स्वनिम विज्ञान (Phonology and Phonetics)
4. रूप-स्वनिम (Mrpho-phoneme)	4. रूप-स्वनिम विज्ञान (Morpho-phonetics)
5. व्याकरणिक व्यवस्था (Grammar System)	5. व्याकरणिक विज्ञान (Grammar)

जब भी कभी ध्वनि को उच्चारित किया जाता है, उसका अपना अलग महत्त्व होता है। सुनने और वहन (Detain) करने से भी ध्वनियों का संबंध स्थापित किया जाता है। जैसे सर्वप्रथम हमारे कानों के द्वारा ध्वनि को सुना जाता है। हमारे मस्तिष्क पर उसके पश्चात उस ध्वनि की प्रतिक्रिया होती है। अत: मस्तिष्क के द्वारा उस कार्य को पूर्ण किया जाता है। ध्वनि संरचना को समझने के लिए ध्वनियों का वर्गीकरण करना अत्यधिक आवश्यक है। भाषा की प्रत्येक ध्वनि **स्वर** और **व्यंजनों** के योग से बनती है।

ध्वनि वाक्‌यंत्र के माध्यम से ही भाषा उत्पन्न होती है। वाक्‌यन्त्र मनुष्य के शरीर में नाभि में स्थित स्वरतंत्री से लेकर ओष्ठ तक फैला हुआ है, जिसके 17 भाग होते हैं। किसी भी शब्द की ध्वनि पहले वायु में घूमती है। उसके पश्चात वह हमारे कानों में प्रवेश करती है। इसी कारण से ध्वनि को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है

1. ध्वनि का उत्पादन (Produciton)
2. ध्वनि का वहन (Transmission)
3. ध्वनि का ग्रहण (Reception)

ध्वनि विज्ञान की तीनों शाखाओं को इन तीनों अंगों के अध्ययन के लिए पूर्णत: विकसित किया गया है। उच्चारणिक ध्वनि विज्ञान को ध्वनि उत्पादन के लिए, भौतिक ध्वनि विज्ञान को वहन करने के लिए, श्रावणिक ध्वनि विज्ञान ग्रहण के लिए प्रयोग किया गया है। उच्चारणिक ध्वनि विज्ञान का महत्त्व सबसे ज्यादा है। अनेक प्रकार की पद्धतियों का प्रयोग ध्वनि के अध्ययन के लिए किया जाता है। जब ध्वनि का उच्चारण वाक् यंत्र के अंतर्गत करते हैं, तो उसे उच्चारणिक पद्धति कहा जाता है। ध्वनि जब उच्चारण के बाद वायु तरंगों के रूप में प्रवाहित होती है, तो उसे यांत्रिक पद्धति का नाम दिया जाता है और 'श्रव्य ध्वनि विज्ञान' उसे कहा जाता है, जब ध्वनियों को आधार बनाकर उनका अध्ययन किया जाता है। इन तीनों प्रकार की ध्वनियों का विवरण निम्न प्रकार से है

(i) उच्चारणिक ध्वनि विज्ञान ध्वनि संरचना का निर्माण सूक्ष्म स्तरों पर किया जाता है। ध्वनि के आधार पर ही भाषा का पूरा तंत्र निर्मित किया जाता है। हमारे द्वारा सांस का लेना ध्वनि बन जाता है। असंख्य ध्वनियों का सृजन वाक्‌यंत्र के माध्यम से हो जाता है। फेफड़े से बाहर आने वाली सांस से भी अनेकों प्रकार की ध्वनियों बन जाती हैं। प्रत्येक सांस अनेक मार्गों से निकलते हुए ध्वनि का रूप धारण कर लेती है। इस प्रकार से एक ही सांस अनेकों प्रकार की ध्वनियों को जन्म देती है।

(ii) यांत्रिक या भौतिक ध्वनि विज्ञान हमारी सांस ध्वनि उच्चारण के पश्चात कुछ समय तक वायुमण्डल में विचरण करती रहती है और फिर ध्वनि तरंग का रूप ले लेती है। इस प्रकार यंत्रों की सहायता से संचरण करने वाली ध्वनि तरंगों का पूर्ण रूप से गहनता से अध्ययन किया जाता है। भौतिकशास्त्र ने ध्वनि विज्ञान के क्षेत्र में काफी कम सहायता की है। भौतिक शास्त्र के द्वारा ऐसे अनेकों यंत्र निर्मित किए गए हैं, जिनके द्वारा ध्वनियों के विविध गुणों का पता लगाया जा सके। कुछ यंत्र बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं, जैसे

www.neerajbooks.com

(i) **ओसिलोग्राफ** ध्वनियों के इस यंत्र के द्वारा कंपन चित्र बन जाते हैं। ध्वनियों की दीर्घता (Length) को इन तरंग चित्रों के आधार पर नापा जा सकता है।

(ii) **स्पेक्टोग्राफ** जब इस यंत्र में ध्वनि प्रवेश करती है, तो इलेक्ट्रॉन की सहायता से इसका चित्र यंत्र पर आ जाता है। ध्वनि के विषय में इस यंत्र के माध्यम से अनेकों प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं।

(iii) **पैटर्न-प्लेबैक** स्पेक्टोग्राफ के द्वारा जो भी ध्वनि चित्र बनता है; उसे इस यंत्र के माध्यम से दुबारा ध्वनि में परिवर्तित किया जा सकता है। यह यंत्र अन्य सभी यंत्रों में अत्यधिक सक्षम माना गया है।

(iv) **स्पीच स्ट्रेचर** अनजान और विदेशी भाषाओं की ध्वनियों को समझना इस यंत्र से काफी सहज हो गया है। एक ही ध्वनि के विभिन्न उच्चरित रूपों को इस यंत्र द्वारा तुलनात्मक ढंग से देखा जा सकता है। बोलियों की ध्वनि को भाषा की ध्वनि के साथ रखकर उनके बीच के अंतरों को इस यंत्र के माध्यम से जाना जा सकता है।

श्रावणिक ध्वनि विज्ञान स्त्रोता के वायुमण्डल में संचरण कर रही ध्वनि तरंगें कर्णपटी में प्रवेश करती हैं। श्रवण प्रक्रिया के माध्यम से कान इन तरंगों को ग्रहण करते हैं। मनुष्य के मुख से उच्चरित होने वाली संरचना को दो भागों में विभक्त किया गया है पहली स्वर ध्वनियाँ तथा दूसरी व्यंजन ध्वनियाँ। स्वर ध्वनियाँ वे ध्वनियाँ होती हैं, जिनके उच्चारण में निर्गत श्वास में कभी भी किसी भी प्रकार की रुकावट न हो।

व्यंजन ध्वनि वह होती है, जब श्वास मुख विवर में पहुँचती है, तो उसे जीभ का कोई भाग, दाँत या ओष्ठ मुख से बाहर निकलने में थोड़ी बाधा पहुँचाते हैं। स्वर ध्वनियों को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है

1. जिह्वा के भागों की दृष्टि से जिह्वा के भागों की दृष्टि से स्वरों के तीन भेद प्राप्त किए जाते हैं

पहला, अग्रस्वर; जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का अग्रभाग ऊपर की ओर जाता है, लेकिन जीभ तालु को पूर्णतः स्पर्श नहीं कर पाती है; जैसे इ, ई, ए, ऐ।

दूसरा, मध्य स्वर, जब जीभ का मध्य भाग ऊपर की ओर अत्यल्प उठकर स्वरों का उच्चारण करता है। स्वरों के उच्चारण में जीभ का हिस्सा, कोमल तालु की ओर उठता है और जीभ के उठने की अनेक प्रकार की स्थितियों के आधार पर विभिन्न प्रकार की स्वर ध्वनियाँ उच्चरित होती प्रतीत होती हैं, उसे स्वर ध्वनि का तीसरा भेद या पश्च स्वर कहा जाता है; जैसे–उ, ऊ, आ आदि।

2. जिह्वा की ऊँचाई की दृष्टि से जिह्वा की ऊँचाई को इसके वर्गीकरण का आधार बनाया जाता है। इस प्रकार की स्थिति जिसमें वायु को निकलने के लिए कम या अधिक स्थान मिलता है, स्वर ध्वनियों के इस आधार पर चार भेद किए गए हैं

(i) **संवृत्त (Close)** जब वायु तरंग और जिह्वा के बीच कम से कम स्थान रिक्त रहता है; जैसे अ, इ।

(ii) **अर्धसंवृत्त (Half Close)** जब वायु तरंग और जिह्वा के बीच संवृत्त ध्वनियों की अपेक्षा थोड़ा अधिक स्थान खाली होता है। जैसे इ तथा ओ ध्वनियाँ।

(iii) **विवृत (Open)** जब स्वर सीमा और जिह्वा के बीच अधिक से अधिक रिक्त स्थान हो; जैसे आ स्वर ध्वनि।

(iv) **अर्धविवृत (Half Open)** जब स्वर सीमा और जिह्वा के बीच विवृत की अपेक्षा थोड़ा कम स्थान खाली हो; जैसे ए तथा औ स्वर ध्वनियां।

3. ओठों की आकृति की दृष्टि से स्वर ध्वनियों के दो प्रकार के वर्ग दिखाई देते हैं

(i) जब ओंठ गोलाकार हों।

(ii) जब ओठ गोलाकार न हों।

सभी पश्च स्वर वृत्ताकार होते हैं। अग्रस्वर सभी अवृत्ताकार होते हैं। स्वरों की ह्रस्वता और दीर्घता को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है

ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ
अ मन	आ मान	इ तिनका	इ तीसरा	उ उल्लू	ऊ ऊन

किसी भी भाषा की भाषा ध्वनि संरचना उसकी जीवनी शक्ति होती है। व्यंजन ध्वनियों का वर्गीकरण भी दो आधारों पर किया गया है पहला स्थान के आधार पर दूसरा प्रयत्न के आधार पर। व्यंजन ध्वनियों को कोमल तालव्य (क, ख, ग, घ) तालव्य (च, छ, ज, झ), मूर्द्धन्य (ट, ठ, ड, ढ), दन्त्य (त, थ, द, ध), ओष्ठ्य (प, फ, ब, भ), वर्तस्य (न, र, ल) और दन्त्योष्ठ (फ, व), प, ब जैसे भागों में विभक्त किया गया है। स्पर्श (क, ग, ट, ड), संघर्षी (व, ह), स्पर्श संघर्षी (च, छ, ज), पार्श्विक (ल), लुण्ठित (र), महाप्राण (प, भ, ख, घ), अल्प प्राण (शेष ध्वनियाँ) उक्षिप्त (ण, ढ) और नासिक्य (न, म) आदि प्रमुख हैं। स्वर व व्यंजन ध्वनियों के मिलने से शब्द और रूप बनते हैं।

शब्द और रूप

शब्द भाषा की महत्त्वपूर्ण व सार्थक संरचना है। शब्द में अर्थ सत्ता पूर्णतः शब्द में निहित होती है। वाक्य पदों से मिलकर बनता है। पदों के सार्थक खण्ड को शब्द कहते हैं। वाक्य से पृथक भी शब्दों की सत्ता दिखाई देती है। वाक्य में आने पर शब्द समूह पद बन जाते हैं। वाक्य में प्रयोग होने वाला व्यावहारिक रूप पद और स्वतंत्र सार्थक उच्चरित ध्वनि समुदाय शब्द कहलाता है। भाषा की अर्थहीन इकाइयाँ ध्वनियाँ होती हैं। इस प्रकार की जो ध्वनियाँ होती हैं, वे सभी निश्चित प्रतीक तो होती हैं, लेकिन किसी भी प्रकार के अर्थ की अभिव्यक्ति करने में समर्थ नहीं